मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 8, Issue - III, April - June 2011

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

मन आज़ाद नहीं है

तन तो आज स्वतंत्र हमारा, लेकिन मन आज़ाद नहीं है
सचमुच आज काट दी हमने
जंजीरें स्वदेश के तन की
बदल दिया इतिहास, बदल दी
चाल समय की, चाल पवन की ।

देख रहा है राम राज्य का
स्वप्न आज साकेत हमारा
खूनी कफन ओढ़ लेती है
लाश मगर दशरथ के प्रण की

मानव तो हो गया आज
आज़ाद दासता बंधन से पर
मजहब के पोथों से ईश्वर का
जीवन आज़ाद नहीं है।
तन तो आज स्वतंत्र हमारा,
लेकिन मन आज़ाद नहीं है।

हम शोणित से सींच देश के
पतझर में बहार ले आए
खाद बना अपने तन की
हमने नवयुग के फूल खिलाए
तन तो आज स्वतंत्र हमारा,
लेकिन मन आज़ाद नहीं है।

– गोपालदास नीरज

Pride Of Society

Mr. C.B. Jain is an executive director at Nuclear Power Corporation of India Ltd, a unit focused on developing nuclear power within the Department of Atomic Energy. A prodigy in academics, he graduated in Electrical Engineering from MITS Gwalior and holds the grade of an outstanding scientist. Despite the lucrative offers that came along the way, he has chosen to spend whole of his career serving the nation by assuming several roles within the Nuclear Power Corporation. He has played a key role in development of several nuclear power projects including the Rawtbhata (Rajasthan), Narora (U.P.) and Kakrapar (Gujrat) atomic projects. Despite his busy schedule, he is a strict follower of moral values. Even during his stint at Moscow, in the inclement climate of 20 degree below the mercury, he maintained his strict vegetarian regime. Along with research, he spends considerable time in social activities.

Young Achievers

Ankur Jain, Jabalpur
AIR 240, Civil Services Examination (IAS)
Email Id: ankur237@gmail.com

Vivek Jain, Lucknow
Selected for PGP at IIM-Calcutta
B.E. Hons., BITS-Pilani, CGPA : 9.64/10
Email Id: vivekjain2188@gmail.com

Aviral Jain, Nagpur
Tata Administrative Services
PGP, IIM Ahemdabad
Interned at Aditya Birla Group
Email Id: avi.aviral@gmail.com

Saurabh Jain, Ashoknagar
Assistant Manager, HSBC; Co-founder, Opptunity.com; Selected to author a post on "Bell Bajao"; Participant: Tata Jagriti Yatra; Represented Indian youth in International Youth Forums in Seliger, Russia and UN AoC Summer School (Portugal)
Email Id: saurabh.jain@iitdalumni.com

Abhishek Jain, Sagar
Management Trainee, Bharti Airtel
PGP, IIM Bangalore,
Interned at Reckitt Benckiser
Email Id: abhishekjain.sgsits@gmail.com

Ruchika Jain, Nagpur
Master of Architecture, CEPT Ahemdabad
All India Rank 56, GATE
Selected for AIJ International Architectural and Urban Design Workshop in Karatsu (Japan)

Chirping Sparrow
Year - 8, Issue - III

Chirping Sparrow is published by
Maitree Jankalyan Samiti
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com, samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984
http://maitreesamooh.blogspot.com

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of **Maitree Jankalyan Samiti.**

रक्षाबंधन का महत्त्व

बहुत समय पहले चौदहवें तीर्थंकर अनन्तनाथ भगवान के समय में श्रीधर्म नाम के एक राजा उज्जैनी नगर में राज करते थे। श्रीधर्म के दरबार में बलि, नमुचि, बृहस्पति एवं प्रह्लाद नाम के चार मंत्री थे । वे चारों वैदिक विचार धारा में कट्टर मान्यता रखते थे और जैन मान्यताओं के घोर विरोधी थे। एक दिन मुनिश्री अकम्पनाचार्य अपने 700 शिष्यों के साथ उज्जैनी नगरी के बाहर पधारे, यह समाचार पता चलते ही उज्जैनी के नागरिक उत्साहपूर्वक मुनिसंघ के दर्शन के लिए आने लगे। यह देखकर राजा ने भी मुनिसंघ के दर्शन हेतु जाने का मन बनाया। मंत्रियों को यह देखकर बहुत ईर्ष्या होने लगी और उन्होंने राजा से कहा कि ये मुनि ढोंगी एवं मूर्ख हैं और राजा के नमन के योग्य नहीं है, लेकिन राजा श्रीधर्म एक अच्छे व्यक्ति थे और उन्होंने मुनिसंघ के दर्शन के लिए जाने का निश्चय किया, सो मंत्रियों को भी अनिच्छा पूर्वक राजा के साथ जाना पड़ा।

मुनिश्री अकम्पनाचार्य अवधिज्ञान के धारक थे, उन्होंने अपने अवधिज्ञान से यह जान लिया कि राज्य के मंत्री जैन धर्म के विरोधी हैं तथा संघ के लिए समस्या खड़ी कर सकते हैं, इसलिए उन्होंने अपने संघ से मौन व्रत धारण करने के लिए कहा। संयोग से एक मुनि श्रुतसागरजी उस समय आहार हेतु उज्जैनी गए हुए थे और आचार्यश्री के इस आदेश से अवगत नहीं थे। जब राजा अपने मंत्रियों के साथ मुनिसंघ के दर्शनार्थ पहुंचे और उन्होंने मुनियों को नमन किया तो सभी मुनि अपने मौन व्रत के कारण शांत रहे और उन्होंने राजा से कुछ नहीं कहा । यह देखकर मंत्रियों ने राजा से कहा, "देखिये ये मुनि कितने घमंडी हैं, ये तो आपसे कुछ बोल भी नहीं रहे हैं, हमें लगता है कि ये सभी मूर्ख हैं और अपनी मूर्खता छुपाने के लिए कुछ बोल नहीं रहे हैं"। राजा ने इस पर कुछ नहीं कहा और वहां से लौट कर आने लगे। वापिस आते हुए उन्हें मुनि श्रुतसागरजी आहार से लौटकर आते हुए दिखे। बलि नाम का मंत्री मुनिश्री को देखकर हँसने लगा और उसने संस्कृत में एक श्लोक कहा जिसका अर्थ है – "देखो यह बैल जो कि चरने के बाद हमारी ही तरफ चला आ रहा है।" यह सुनकर मुनि श्रुतसागरजी ने एक और श्लोक कहा जिसके शब्द तो मंत्री के श्लोक के जैसे ही थे, परन्तु उसका अर्थ एकदम अलग था । यह सुनकर मंत्री को क्रोध आ गया और वह मुनिश्री से वाद-विवाद करने लगा । श्रुतसागरजी बहुत ज्ञानी मुनि थे और उन्होंने वाद-विवाद में बलि को पराजित कर दिया। बलि अपने आपको राजा के सामने अपमानित हुआ महसूस करने लगा उसने अन्य मंत्रियों के साथ मिलकर इसका बदला लेने की ठानी। उन्होंने निश्चय किया कि वे सभी मुनियों को मार डालेंगे, यह सोचकर वे चारों रात में नगर के बाहर आए। इस बीच श्रुतसागर जी ने सारी घटना आचार्य को बताई, उन्होंने विचार करके कहा कि इस कारण से सारे संघ पर समस्या आने वाली है, अत: उन्होंने श्रुतसागरजी से विवाद के स्थान पर जाकर रातभर ध्यान करन के लिए कहा। मुनिश्री ने यह आदेश स्वीकार किया और विवाद के स्थान पर जाकर आत्म ध्यान करने लगे।

जब चारों मंत्री मुनिसंघ से बदला लेने का विचार बनाकर जा रहे थे तो उन्होंने ध्यान में बैठे मुनि को देखा और तुरन्त ही पहचान गए । उन्होंने कहा कि हमारे अपमानों का कारण यही मुनि है, सो सारे संघ से बदला लेने की बजाय हम इसे ही मार डालते हैं। उन्होंने अपनी-अपनी तलवार ध्यान में बैठे मुनिश्री को मारने के लिए उठाई। यह देखकर उज्जैनी नगरी के नगर देवता ने उन सभी मंत्रियों के वैसी ही मुद्रा में स्थिर कर दिया और मुनिश्री की प्राण रक्षा की। अगली सुबह जब नगर के लोगों ने हाथ में तलवार लिए मंत्रियों को देखा तो वे सारी घटना समझ गए । यह सुनकर राजा दौड़कर मुनिश्री के पास आए और उनके चरण पकड़कर क्षमा मांगने लगे। राजा ने कहा कि मैं इन मंत्रियों को प्राण दंड दूंगा। इसे सुनकर क्षमाधारी मुनिश्री ने राजा से कहा कि वह मंत्रियों को इतना कठिन दंड न दें । अत: राजा ने आदेश दिया कि उन चारों मंत्रियों का मुंह काला करके सारे नगर में घुमाया जाए और उसके पश्चात् उन्हें सदा के लिए नगर से निष्कासित कर दिया जाए। राजा के आदेशानुसार उन मंत्रियों को दंड दिया गया और मंत्रियों को नगर से निष्काषित कर दिया गया। चारों मंत्री कई मील पार कर उत्तर की ओर चले ओर राजा पद्म के नगर हस्तिनापुर पहुंचे । उन्होंने राजा के दरबार में पहुंच कर उसकी बहुत बड़ाई की और ब्राह्मण होने के नाते उसे बहुत सारा आशीष दिया, इससे प्रसन्न होकर राजा ने उन्हें अपना मंत्री बनाने का आग्रह किया जिसके लिए वे चारों सहमत हो गए। राजा पद्म उनके कार्यों से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने बलि को दो वर देने का वचन दिया।

इसके बाद बहुत समय व्यतीत हो गया और अनेक राज्यों से होते हुए अकम्पनाचार्य का संघ चातुर्मास के समय हस्तिनापुर नगरी पहुंचा । उन्हें देखते ही

मंत्रियों ने पहचान लिया और बदला लेने की उनकी इच्छा फिर जाग गई। बलि राजा पद्म के पास गया और उसने राजा से अपने दो वर देने को कहा। राजा ने कहा, '' जो चाहे मांग लो।'' बलि ने कहा, ''पहला वर यह कि मैं 7 दिनों के लिए हस्तिनापुर का राजा बनना चाहता हूँ और दूसरा यह कि 7 दिनों के लिए आप महल के भीतर ही रहें''। राजा ने ये दोनों वर बलि को प्रदान किए। राजा बनते ही बलि ने आदेश दिया कि मुनि संघ के चारों ओर ऊँची दीवार खड़ी कर एक वेदी बनायी जाए और उसके भीतर एक नर मेघ यज्ञ किया जाए। मुनि अपने ऊपर होते इस उपसर्ग को देखते हुए ध्यान में बैठ गए। यज्ञ वेदी की अग्नि के कारण शुरू हुई गरम हवा और धुएं के कारण सभी मुनि काले पड़ गए।

मुनियों पर हो रहे उपसर्ग के बारे में सुनकर विष्णुकुमार मुनि वामन का रूप धारण कर बलि के दरबार में आए और उन्होंने बलि से अपने लिए दक्षिणा मांगी। बलि ने कहा, ''हे बटुक, तुम्हें जो चाहिए मांग लो''। बटुक ने कहा, ''मुझे यज्ञ करने के लिए तीन पग भूमि चाहिए और ये तीन पग मैं अपने पैरों से गिनकर लूँगा''। इस पर बलि हंसने लगा और उसने कहा, ''हे ब्राह्मण मुझे तुम पर दया आती है, तुमने मांगी भी तो ऐसी छोटी वस्तु, आगे बढ़ो और अपनी तीन पग भूमि ले लो''। इसके बाद बटुक का रूप धारण किए विष्णुकुमार ने विक्रिया ऋद्धि से अपना कद इतना बड़ा कर लिया कि पहला पग उन्होंने सुमेरू पर्वत पर रखा और दूसरा पग मानुषोत्तर पर्वत पर, अब तीसरा पग रखने के लिए कोई भूमि नहीं बची थी। बटुक ने बलि से कहा ''मुझे अपना तीसरा पग रखने के लिए स्थान दो, अन्यथा तुम नरक में स्थान पाओगे''। बलि क्षमा करने की गुहार करने ला तो विष्णुकुमार ने बलि को क्षमा कर दिया और बलि ने भी गलती का पश्चाताप करते हुए मुनि संघ पर हो रहे सभी उपसर्ग बंद कर दिए। उसने जैन धर्म का मार्ग अपनाने का निश्चय किया। विष्णुकुमार ने भी दिगम्बर मुनि दीक्षा पुनः धारण की।

उस दिन हस्तिनापुर के सभी नागरिकों ने यह प्रण लिया कि वे धर्म एवं मुनियों की रक्षा के लिए अपने प्राण भी त्याग देंगे। इसी निश्चय के प्रतीक स्वरूप उन्होंने एक दूसरे की कलाइयों पर रक्षा सूत्र बांधे, तभी से जैन धर्म के अनुयायी रक्षाबंधन का त्यौहार मानते हैं। भारत के अन्य धर्मों की परम्परा के अनुसार जैनी लोग भी आजकल रक्षाबंधन को भाई बहन के त्यौहार के रूप में मानते हैं, मगर वास्तविकता में यह धर्म और मुनि संघ की रक्षा का प्रतीक है।

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा मार्च 22, 2008 को भारतीय आर्थिक संगोष्टी, व्हार्टन में दिया गया एक साक्षात्कार।

Q. क्या आप अपने व्यक्तिगत अनुभव से कोई उदाहरण दे सकते हैं कि लीडर अपनी असफलताओं को किस प्रकार लें?

A. मैं आपको अपने एक अनुभव के बारे में बताता हूँ। सन् 1973 में मुझे भारत के ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (SLV- 3) का प्रोजेक्ट डायरेक्टर बनाया गया। हमारा लक्ष्य था – सन् 1980 तक भारतीय उपग्रह ''रोहिणी'' को अपनी कक्षा में स्थापित करना। वैज्ञानिकों और तकनीकी एक्सपर्ट्स की अनेक टीमों में हजारों लोगों ने इस लक्ष्य को पाने के लिए काम किया। सन् 1979 में लगभग अगस्त महीने के आसपास हमें लगा कि हम तैयार हैं। प्रोजेक्ट डायरेक्टर होने के नाते, मैं प्रक्षेपण नियंत्रण कक्ष में गया। उपग्रह प्रक्षेपण से चार मिनिट पहले कम्प्यूटर ने सभी आवश्यक तैयारियों की जांच शुरू की। एक मिनिट पहले कम्प्यूटर ने उड़ान स्थगित कर दी। डिस्प्ले बता रहा था कि उड़ान के लिए आवश्यक कुछ भाग ठीक नहीं थे। मेरे चार पांच साथी विशेषज्ञों ने कहा – सर चिन्ता न करें, हमनें अपना हिसाब कर लिया है और उसके हिसाब से हमारे पास काफी रिजर्व ईंधन है, ये सुनकर मैंने कम्प्यूटर की चेतावनी को नजर अंदाज किया और मेनुअल मोड में जाकर रॉकेट शुरू कर दिया। उड़ान के पहले चरण में सब कुछ ठीक हुआ, मगर दूसरे चरण में कुछ समस्या आ गई। उपग्रह अपनी कक्षा में जाने की बजाय रॉकेट सहित बंगाल की खाड़ी में गिरकर डूब गया। यह हमारे लिए एक बहुत बड़ी असफलता थी।

उस दिन ISRO के चेयरमेन प्रो. सतीश धवन ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई थी, उपग्रह की उड़ान सुबह 7 बजे होनी थी और प्रेस कॉन्फ्रेंस 7.45 बजे, जिसमें भाग लेने विश्व भर से पत्रकार श्री हरिकोटा (आंध्रप्रदेश) आए हुए थे। प्रो. धवन जो इसरो के प्रणेता थे, ने स्वयं प्रेस कॉन्फ्रेंस की अगुवाई की, उन्होंने इस असफलता की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। उन्होंने कहा – यहाँ की पूरी टीम ने बहुत मेहनत की, मगर उन्हें और अधिक प्रायोगिक मदद की आवश्यकता है। उन्होंने मीडिया को आश्वासन दिया कि एक साल के अन्दर हमारी टीम अवश्य सफल होगी। वैसे तो प्रोजेक्ट डायरेक्टर होने के नाते इस असफलता का जिम्मा मेरा था। मगर संस्थान के चेयरमेन होने के नाते उन्होंने इसका जिम्मा अपने ऊपर ले लिया।

अगले वर्ष जुलाई 1980 में हमने उपग्रह प्रक्षेपित करने की फिर कोशिश की और इस बार हम सफल हुए। सारा देश हमारी सफलता से उल्लासित था, फिर एक बार प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई गई थी। प्रो. धवन ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा आज की कॉन्फ्रेंस तुम संचालित करो। मैंने उस दिन एक बहुत जरूरी शिक्षा पायी, जब असफलता सामने आई तो संस्थान के अगुआ (प्रो. धवन) ने असफलता अपने ऊपर स्वीकार कर ली और जब सफलता सामने आई, तब उन्होंने उसका सारा श्रेय अपनी टीम को दिया। प्रबंधन का जो सर्वश्रेष्ठ पाठ मैंने पढ़ा वो किसी किताब से नहीं बल्कि जीवन के इस विशेष अनुभव से मुझे मिला।

Q. चातुर्मास स्थापना के अवसर पर कलश क्यों स्थापित किया जाता है? क्या आवश्यक है कि वह बहुत सुन्दर और कीमती हो, साधारण से काम नहीं चल सकता क्या?

A. वास्तव में देखा जाए तो मुनि महाराज जी भक्तियों के द्वारा अपने चातुर्मास की जो स्थापना करते हैं उसके स्थापना की कोई बात नहीं है। रही बात श्रावकों के संकल्प की तो मिट्टी, पीतल, तम्बा, इत्यादि धातु में निर्मित कलश की स्थापना करके कर सकते हैं। वैसे कलश का अर्थ कुम्भ जो कि मिट्टी का हो यह योग्य है। पर आजकल अपनी मान कषाय की पुष्टि के लिए चांदी के सुन्दर कलश और एक के स्थान पर तीन-तीन कलशों की स्थापना करने का रिवाज चल पड़ा है और कलश की बोली भी लाखों रूपयों की होती है इससे जिस महाराज के कलश की स्थापना की जा रही है उसमें उनका स्टेट्स मालूम पड़ता है कि वह कितना बड़ा है। जितनी अधिक बोली होगी उतने अधिक अपने बड़े होने का अहसास होगा। पहले आहार जी के चामुर्मास तक आचार्य महाराज कलश स्थापना नहीं कराते थे, पर तब लोगो के कहने से करवाना शुरू कर दिया है, पर आवश्यक नहीं है।

अतुल जैन (एम.पी.सी.4009), गोटेगांव

Q. सुनते हैं कि जीवन के अंतिम समय भाव शुभ हों और यदि वह समाधिमरण को प्राप्त होता है तो उसे अच्छी गति प्राप्त होती है तो क्या जीवन भर अशुभ कर्म करके अंतिम समय में जीवन सुधार लेना सार्थक होगा?

A. यह तो सही है कि जीवन के अंतिम क्षणों में मनुष्य के भाव शुभ हों और यदि वह अच्छे भावों से समाधिमरण करे तो उसे अच्छी गति प्राप्त होती है। लेकिन जीवन भर जिसने पाप कार्य किये हैं उनका फल उसे अगले जन्म में अवश्य ही भोगना पड़ेगा। आयुबन्ध के समय शुभ परिणाम होने से अच्छी आयु बंध गयी लेकिन उस आयु के पाप कर्मों का फल असाता के रूप में भोगना पडेगा जैस कोई अच्छे भावों से मनुष्य आयु को पा गया परन्तु जीवन भर किये पापों के फलस्वरूप उसे मनुष्य होने के साथ-साथ दुख भोगना पड़ेगा। बुरे कर्मों का फल अच्छा कार्य करने से कम अवश्य हो जाता है लेकिन समाप्त नहीं होता, वह बुरे के रूप में ही अपना फल देता है। एक व्यक्ति मरते समय मायाचारी के भाव होने से तिर्यंच पर्याय में गया और मानलो कुत्ता हो गया पर यदि उसने जीवन भर अच्छे कर्म किये हैं तो उनका अच्छा फल भी उसे कुत्ते के जीवन में प्राप्त होगा। अर्थात कुत्ते को सब सुविधाएं प्राप्त होगी। इसलिए क्षण भर में जीवन को सुधार लेना एकदम आसान नहीं है। पुराणों में ऐसे उदाहरण अवश्य आते हैं कि बहुत हिंसा करने पर भी कोई व्यक्ति मुनि बनकर तपस्या करके अपने कर्म को नष्ट करके अपना कल्याण कर सकता है अर्थात भगवान बन सकता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हम क्षण भर में ही अपने जीवन को सुधार कर जीवन की सार्थकता को प्राप्त हो सकते हैं।

जे.के.जैन, बीना

Q. ट्रेन या प्लेन से Travel करने में क्या प्लेन में अधिक पाप पड़ता है?

A. ट्रेन और प्लेन का उपयोग करने से हिंसा का पाप तो लगता ही है। प्लेन से वायुकायिक जीवों की विराधना होती है, परन्तु ट्रेन से वायुकायिक जीवों की विराधना तो होती है परन्तु बड़े जीवों की भी विराधना होती है। अतः ट्रेन की अपेक्षा प्लेन से सफर करने में जीवों की विराधना कम होती है। परन्तु जीवों की विराधना दोनों में होती है उसमें सावधानी रखना चाहिए। दोनों का उपयोग साधु को नहीं करना चाहिए।

अनुभा जैन, MPX 4016

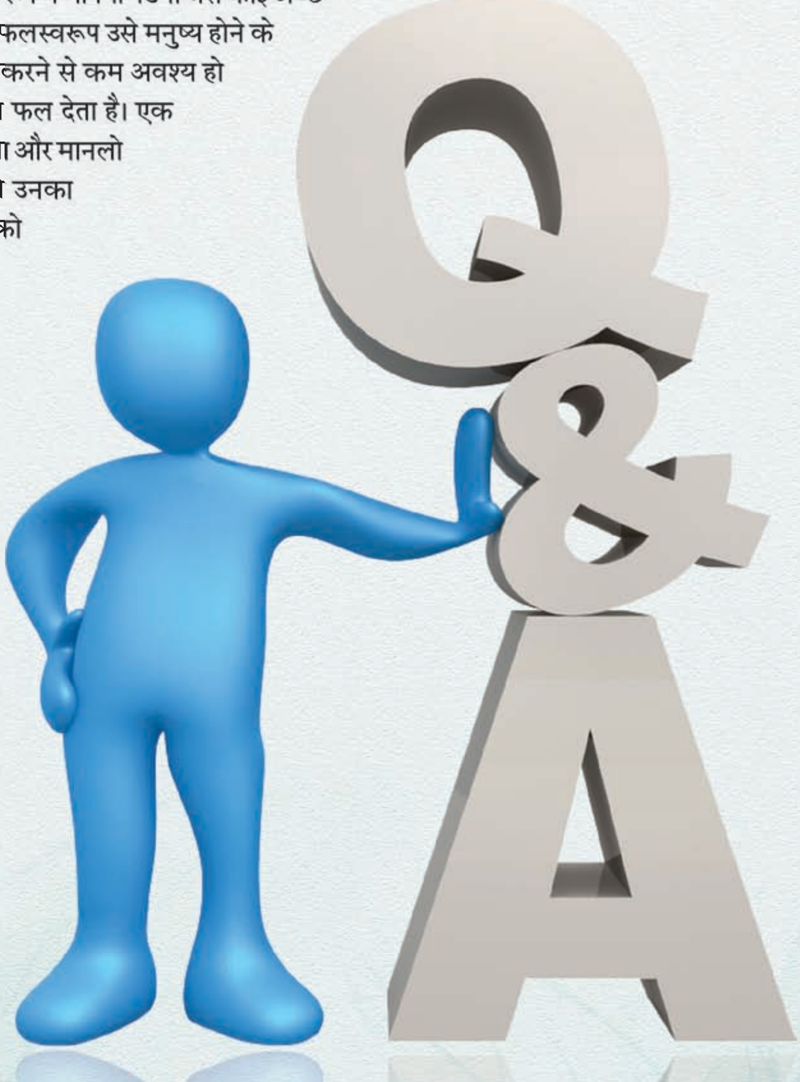

*आपकी भी कोई शंका या प्रश्न हो तो हमें लिख भेजें। मुनिश्री द्वारा इसका उत्तर दिया जाएगा। पता - मैत्री समूह, पोस्ट बॉक्स नम्बर 15, विदिशा (मध्यप्रदेश) पिनकोड - **464 001***

RAIN WATER HARVESTING

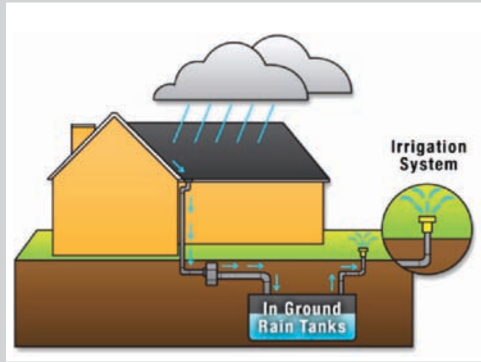

As the world goes into the 21st century, we as a society would need to change our views on resources which are considered everlasting and never ending; case in point being fresh water and fresh air. The importance of water harvesting has, therefore, grown manifolds and needs to be understood by the general mass.

Today, in highly urbanized cities, 92% of rain water is getting lost instead of recharging the ground water. This is leading to two major problems that we face in a city, namely, lack of ground water across the city during summers and flooding of our streets and homes during the monsoons due to lack of proper drainage systems. We keep encroaching upon the lakes and build concrete jungles with little scope for ground water recharge. The gravity of the drinking water crisis in the city can be gauged by the crores of rupees being spent by the government to bring water from the rivers. It is also highly taxing on the environment as pumping of water requires lots of energy, which is already scarce during summers. The other side is the flooding of our roads and homes during any brief spell of rainfall in the city. Flooding brings with it a wide variety of loss in terms of water borne diseases and congestion on our roads. Rain Water Harvesting is a simple yet very effective solution to these problems. Rainwater Harvesting is simply collecting, storing and purifying the naturally soft and pure rainfall that falls upon your roof. Rainwater may be utilized for both potable and non-potable requirements. There are a number of types of systems to harvest rainwater ranging from very simple to the complex industrial systems. Rainwater harvesting systems can be simple to construct from inexpensive local materials, and are potentially successful in most habitable locations. The advantages of rainwater harvesting are many, ranging from lower cost of water because of higher supply, preventing flooding and soil erosion to higher water levels.

If we as individuals get judicious in our use of water and if we as a society take steps at rain water harvesting and other measures to preserve water, our future generations will be thankful to us, otherwise the problem of fresh water availability for the world would accentuate.

Compiled by - Shweta Jain, Hyderabad

परमार्थ

एक बालक नित्य विद्यालय पढ़ने जाता था। घर में उसकी माँ अपने बेटे पर प्राण न्यौछावर किए रहती थी। उसकी हर मांग पूरी करने में आनन्द का अनुभव करती। पुत्र भी पढ़ने-लिखने में बड़ा तेज और परिश्रमी था, खेल के समय खेलता, लेकिन पढ़ने के समय का ध्यान रखता। एक दिन दरवाजे पर किसी ने – 'माई ! ओ माई !' पुकारते हुए आवाज लगाई तो बालक हाथ में पुस्तक पकड़े हुए दरवाजे पर गया, देखा कि एक फटेहाल बुढ़िया कांपते हाथ फैलाए खड़ी थी।

उसने कहा, बेटा ! कुछ भीख दे दे। 'बुढ़िया के मुंह से बेटा सुनकर वह भावुक हो गया और माँ से आकर कहने लगा, 'माँ एक बेचारी गरीब माँ मुझे बेटा कहकर कुछ मांग रही है।' उस समय घर में कुछ खाने की चीज नहीं थी, इसलिए माँ ने कहा, 'बेटा ! रोटी-भात तो कुछ बचा नहीं है, चाहे तो चावल दे दो।' पर बालक ने हठ करते हुए कहा – माँ चावल से क्या होगा ? तुम जो अपने हाथ में सोने का कंगन पहने हो, वही दे दो न उस बेचारी को। मैं जब बड़ा होकर कमाऊंगा तो तुम्हें कंगन बनवा दूंगा। 'माँ ने बालक का मन रखने के लिए सच में ही सोने का अपना वह कंगन कलाई से उतारा और कहा, 'लो दे दो।' बालक खुशी-खुशी वह कंगन उस भिखारिन को दे आया। भिखारिन को तो मानो एक खजाना ही मिल गया। कंगन बेचकर उसने परिवार के बच्चों के लिए अनाज, कपड़े आदि जुटा लिए। उसका पति अंधा था। उधर वह बालक पढ़-लिखकर बड़ा विद्वान हुआ, काफी नाम कमाया।

एक दिन वह माँ से बोला, 'माँ तुम अपने हाथ का नाप दे दो, मैं कंगन बनवा दूँ।' उसे बचपन का अपना वचन याद था। पर माता ने कहा, 'उसकी चिन्ता छोड ! मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूँ कि अब मुझे कंगन शोभा नहीं देंगे। हाँ, कलकत्ते के तमाम गरीब बालक विद्यालय और चिकित्सा के लिए मारे-मारे फिरते हैं, उनके लिए तू एक विद्यालय और एक चिकित्सालय खुलवा दे, जहाँ निःशुल्क पढ़ाई और चिकित्सा की व्यवस्था हो।'

माँ के उस पुत्र का नाम है - ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ।

योग्य कौन?

एक राजा को अपने दरबार के किसी उत्तरदायित्वपूर्ण पद के लिए योग्य और विश्वसनीय व्यक्ति की तलाश थी। उसने अपने आस-पास के युवकों को परखना शुरू किया, लेकिन वह किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाया। तभी एक महात्मा का पदार्पण हुआ। युवा राजा ने वयोवृद्ध सन्यासी के सम्मुख अपने मन की बात प्रकट की। "मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ। अनेक लोगों पर मैंने विचार किया, अब मेरी दृष्टि में दो हैं, इन्हीं दोनों में से एक को रखना चाहता हूँ।"

"कौन हैं ये दोनों?"

"एक तो राज परिवार से ही संबंधित है, पर दूसरा बाहर का है। उसका पिता पहले हमारा सेवक हुआ करता था, उसका देहांत हो गया है, उसका यह बेटा पढ़ा-लिखा सुयोग्य है।"

"और राज परिवार से संबंधित युवक?"

"उसकी योग्यता 'मामूली' है।"

"आपका मन किसके पक्ष में है?"

"मेरा मन किसके पक्ष में है? मेरे मन में द्वंद्व है, स्वामी।"

"किस बात को लेकर?"

"राज परिवार का रिश्तेदार कम योग्य होने पर भी अपना है, और ...."

"रोजाना रोग शरीर में उपजता है तो वह भी अपना ही होता है, पर उसका उपचार जंगलों और पहाड़ों पर उगने वाली जड़ी-बूटियों से किया जाता है, ये चीजें अपनी नहीं होकर भी हितकारी होती हैं।" राजा की आंखों के आगे से धुंधलाहट छट गई और उसने निरपेक्ष होकर सही आदमी को चुन लिया।"

YOUNG JAINA ACHIEVERS 2011

Maitree Samooh is proud to launch the Young Jaina Achievers 2011 - An initiative to recognize Young Jain talent in fields such as Education, Culture, Arts, Sports, Literature, Civil Services, Competitive Exams and Social Initiatives. In continuation of our efforts to recognize the young talent, promote high education and inculcate Indian values we have decided to dedicate the forthcoming Oct- Dec 2011 issue of 'Chirping Sparrow' for this. We invite applications for Young Jaina Achievers 2011. Please include achievements of the last academic year (2010-11) only.

यंग जैन अचीव्हर्स की पहचान के लिए मैत्री समूह ने Young Achievers 2011 form तैयार किया है।
शिक्षा, संस्कृति, कला, खेल, साहित्य, प्रशासनिक सेवाओं, प्रतिस्पर्धा परीक्षाओं और सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में वर्ष 2010-2011 में विशिष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करने वाले इस फॉर्म को अवश्य भरें। हम अपने आगामी अंक Oct-Dec 2011 में यह जानकारी जरूर छापेंगे।

Please find further details and the link below.
http://maitreesamooh.blogspot.com/p/young-jaina-achievers.html
For any query feel free to contact us at: **Phone No: +91 9425424984, +91 9827440301**
Email: **samooh.maitree@gmail.com , maitreesamooh@hotmail.com**
Address: **Maitree Samooh, Post bag No. 15 Vidisha, Madhya Pradesh, PIN - 464002**

One Extra Bedroom

I had acquired a degree in Software Engineering and joined a company based in USA - the land of braves and opportunity. When I arrived in the USA, it was as if a dream had come true. Here, at last, I was in the place where I wanted to be. I decided I would be staying in this country for about five years, as I would have earned enough money to settle down in India. My father was a government employee and after his retirement, the only asset he could acquire was a decent one bedroom flat.

I wanted to do some thing more than him. I started feeling homesick and lonely as the time passed. I used to call home and speak to my parents every week using cheap international phone cards. Two years passed- two years of Burgers at McDonald's and Pizzas and discos; and another two years watching the foreign exchange rate, getting happy whenever the Rupee value went down.

Finally I decided to get married. I told my parents that I have only 10 days of holidays and everything must be done within these 10 days. I got my ticket booked in the cheapest flight. I was jubilant and was actually enjoying hopping for gifts for all my friends back home. If I miss anyone then there will be talks. After reaching home I spent one week going through all the photographs of girls and as the time was getting over I was forced to select one candidate.

In-laws told me, to my surprise, that I would have to get married in 2-3 days, as I will not get anymore holidays. After the marriage, it was time to return to USA. After giving some money to my parents and telling the neighbors to look after them, we returned to USA. My wife enjoyed this country for about two months and then she started feeling lonely. The frequency of calling India increased to twice in a week to sometimes 3 times a week. Our savings started diminishing. After two more years we started to have kids. Two lovely kids - a boy and a girl, were gifted to us by the almighty. Every time I spoke to my parents, they asked me to come to India so that they can see their grand-children. Every year I decided to go to India, but part work and part monetary conditions prevented it. Years went by and visiting India was a distant dream. Then suddenly one day I got a message that my parents were seriously sick. I tried but I couldn't get any holidays and thus could not go to India .The next message I got was my parents had passed away and as there was no one to do the last rites, the society members had done whatever they could. I was depressed. My parents had passed away without seeing their grand children.

After couple more years passed away, much to my children's dislike and my wife's joy we returned to India to settle down. I started to look for a suitable property, but to my dismay my savings were short and the property prices had gone up during all these years. I had to return to the USA. My wife refused to come back with me and my children refused to stay in India. My two children and I returned to USA after promising my wife I would be back for good after two years. Time passed by, my daughter decided to get married to an American and my son was happy living in USA. I decided to wind-up every thing and returned to India. I had just enough money to buy a decent two bedroom flat in a well-developed locality. Now I am 60 years old and the only time I go out of the flat is for the routine visit to the nearby temple. My faithful wife has also left me and gone to the holy abode.

Sometimes I wonder was it worth all this?
My father, even after staying in India, had a house to his name and I too have the same, nothing more. I lost my parents and children for just ONE EXTRA BEDROOM.

Looking out from the window I see a lot of children dancing. This damned cable TV has spoiled our new generation and these children are losing their values and culture because of it. I get occasional cards from my children asking if I am alright. Well, at least, they remember me. Now perhaps after I die, it will be the neighbors again who will be performing my last rites, God Bless them.

But the question still remains 'was all this worth it?'

I am still searching for an answer................! Is it just for one extra bedroom?

आत्म-विश्वास

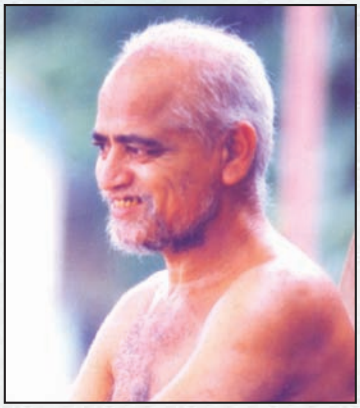

ईसरी में वर्षायोग पूरा हुआ। आचार्य महाराज ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन कलकत्ता में प्रतिवर्ष होने वाले भगवान पार्श्वनाथ के उत्सव में पहुँचने का मन बना लिया, लेकिन हमेशा की तरह अपने अतिथि स्वभाव के अनुरूप किसी से बिना कुछ बताये कलकत्ता की ओर चल पड़े। लोगों में तरह-तरह की चर्चाएं होने लगीं। मार्ग दुर्गम है, मार्ग में श्रावकों के घर नहीं हैं। बड़ा अशान्त क्षेत्र है। बंगाल के लोग पता नहीं कैसा व्यवहार करेंगे। महाराज को वहाँ नहीं जाना चाहिए। कलकत्ता से श्रावक आए। निवेदन किया, "बंगाल सुरक्षित प्रदेश नहीं है। आप वहाँ पधारे, ऐसी हम सभी की भावना तो है, लेकिन भय भी लगता है"। आचार्य महाराज हमेशा की तरह मुस्कराए, अभय मुद्रा में हाथ उठाकर आशीष दिया और आगे बढ़ गए।

यात्रा चलती रही। निरन्तर बढ़ते कदमों से गूंजता मंगल गान, लोगों के मन को आगामी मंगल का आश्वासन देता रहा और देखते-देखते साढ़े तीन सौ किलोमीटर की दूरी दस दिन में तय हो गई। ग्यारहवें दिन जब अपने संघ के साथ आचार्य महाराज ने कलकत्ता में प्रवेश किया तब हजारों लोग उनके दृढ़-संकल्प के सामने सिर झुकाए खड़े थे। उस दिन वह महानगर, महाव्रती दिगम्बर जैन आचार्य की चरण धूलि पाकर पवित्र हो गया।

बड़ा मन्दिर से बेलगछिया तक हजारों लोगो के बीच उनका सहज भाव से गुजरना आम आदमी के लिए अद्भुत घटना थी। देखने वालों ने उस दिन यही कहा कि विशाल जुलूस के बीच अनेक श्रमणों से परिवेष्टित जैनों के एक महान आचार्य का दर्शन करके हम धन्य हो गए। उस दिन दुकानों पर खड़े लोगों और मकान के छज्जों में झाँकती हजारों आँखों ने बालकवत्, यथाजात, निर्ग्रन्थ श्रमण के पवित्र सौन्दर्य को देखकर और कुछ भी देखने से इंकार कर दिया।

सचमुच, विद्या-रथ पर आरूढ़ होकर, ख्याति, पूजा, लाभ आदि समस्त मनोरथों को रोककर, जो श्रमण-भगवन्त विचरण करते हैं उनके दृढ़-संकल्प से धर्म-प्रभावना सहज ही होती रहती है।

ईसरी, 1983

उसने कहा

उसने कहा
मौत ने आकर
उससे पूछा-
मेरे आने से पहले
वह
क्या करता रहा?
उसने कहा-
आपके स्वागत में
पूरे होश
और जोश में
जीता रहा
सुना है
मौत ने
उसे प्रणाम किया
और कहा-
अच्छा जियो
अलविदा!

-मुनि क्षमासागर

HE SAID

He Said
Death came and asked him,
'What were you so busy doing
before I arrived?'

He said, 'I lived with full alertness
in order to welcome
Your coming.'

I am told that Death
Saluted him and said,
'Great! Go on living.
Goodbye.'

- Translated by Sunita Jain

मुक्ति से साभार

You've Got To Find What You Love

Commencement Address by Steve Jobs, CEO of Apple Computers and Pixar Animation Studios: Delivered on June 12, 2005 at Stanford University.

...continued from last issue.

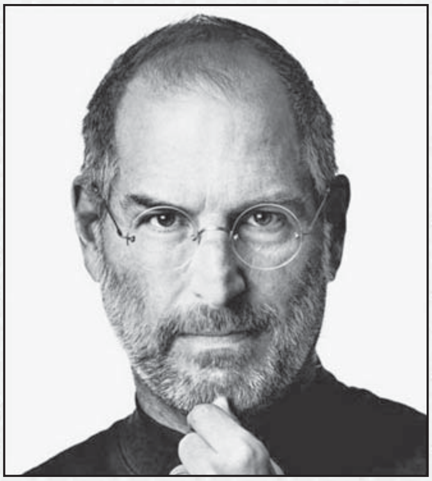

My third story is about death.

When I was 17, I read a quote that went something like: "If you live each day as if it was your last, someday you'll most certainly be right." It made an impression on me, and since then, for the past 33 years, I have looked in the mirror every morning and asked myself: "If today were the last day of my life, would I want to do what I am about to do today?" And whenever the answer has been "No" for too many days in a row, I know I need to change something.

Remembering that I'll be dead soon is the most important tool I've ever encountered to help me make the big choices in life. Because almost everything - all external expectations, all pride, all fear of embarrassment or failure - these things just fall away in the face of death, leaving only what is truly important. Remembering that you are going to die is the best way I know to avoid the trap of thinking you have something to lose. You are already naked. There is no reason not to follow your heart.

About a year ago I was diagnosed with cancer. I had a scan at 7:30 in the morning, and it clearly showed a tumor on my pancreas. I didn't even know what a pancreas was. The doctors told me this was almost certainly a type of cancer that is incurable, and that I should expect to live no longer than three to six months. My doctor advised me to go home and get my affairs in order, which is doctor's code for prepare to die. It means to try to tell your kids everything you thought you'd have the next 10 years to tell them in just a few months. It means to make sure everything is buttoned up so that it will be as easy as possible for your family. It means to say your goodbyes. I lived with that diagnosis all day. Later that evening I had a biopsy, where they stuck an endoscope down my throat, through my stomach and into my intestines, put a needle into my pancreas and got a few cells from the tumor. I was sedated, but my wife, who was there, told me that when they viewed the cells under a microscope the doctors started crying because it turned out to be a very rare form of pancreatic cancer that is curable with surgery. I had the surgery and I'm fine now.

This was the closest I've been to facing death, and I hope it's the closest I get for a few more decades. Having lived through it, I can now say this to you with a bit more certainty than when death was a useful but purely intellectual concept: No one wants to die. Even people who want to go to heaven don't want to die to get there. And yet death is the destination we all share. No one has ever escaped it. And that is as it should be, because Death is very likely the single best invention of Life. It is Life's change agent. It clears out the old to make way for the new. Right now the new is you, but someday not too long from now, you will gradually become the old and be cleared away. Sorry to be so dramatic, but it is quite true. Your time is limited, so don't waste it living someone else's life. Don't be trapped by dogma which is living with the results of other people's thinking. Don't let the noise of others' opinions drown out your own inner voice. And most importantly, have the courage to follow your heart and intuition. They somehow already know what you truly want to become. Everything else is secondary.

When I was young, there was an amazing publication called The Whole Earth Catalog, which was one of the bibles of my generation. It was created by a fellow named Stewart Brand not far from here in Menlo Park, and he brought it to life with his poetic touch. This was in the late 1960's, before personal computers and desktop publishing, so it was all made with typewriters, scissors, and polaroid cameras. It was sort of like Google in paperback form, 35 years before Google came along: it was idealistic, and overflowing with neat tools and great notions. Stewart and his team put out several issues of The Whole Earth Catalog, and then when it had run its course, they put out a final issue. It was the mid-1970s, and I was your age. On the back cover of their final issue was a photograph of an early morning country road, the kind you might find yourself hitchhiking on if you were so adventurous. Beneath it were the words: "Stay Hungry. Stay Foolish." It was their farewell message as they signed off. Stay Hungry. Stay Foolish. And I have always wished that for myself. And now, as you graduate to begin anew, I wish that for you

Stay Hungry. Stay Foolish.

Received the pdf version of the magazine "Chirping Sparrow". Thank you! Is it right that the magazine is bilingual and addressed to students of different subjects in India and outside India? Let me make a suggestion: The column "Environment and Consumerism" can be enlarged from time to time by English reviews on books or recent articles. For example there is Prof. Bollée's new-edition of Alsdorf's "History of Vegetarianism".

Signe, Germany

I would like to congratulate you for continuous publication of Chirping Sparrow as it inspires all of us. I am an awardee of 2005 YJA. I have a few suggestions and comments.

1. Please keep us informed about the health & where-about of Muni Shri.
2. I have not been receiving 'Chirping Sparrow's' issues for some time now, who should I contact or would you look into the matter yourself?
3. There are some questions I would like to ask Muni Shri myself, how do I write to him? I look forward to you for an immediate response.

Saurabh Jain, Ajmer

Thanks a lot for considering my request to reconnect me with this enlightening community (through Chirping Sparrow). Me and my parents were inspired by Munishri's preaching and really liked the award ceremony at Ramganjmandi. We really appreciate the effort that Maitree Samooh puts in, to encourage the youth of Jain community.

These days I am working with Infosys Limited. Kindly let us know if we can get another opportunity to attend another such award ceremony and to meet Munishri (not as awardee but as devotee). Please keep in touch.

Aditya Jain, Noida, YJA Reg. No. 310458

"माँ तू होती तो..."

नींद बहुत आती है पढ़ते पढ़ते...
माँ होती तो कह देता, एक प्याली चाय बना दे!!

थक गया जली रोटी खा खा कर
माँ होती तो कह देता पराठे बना दे!!

भीग गई आंसुओं से आँखे मेरी...
माँ होती तो कह देता आँचल दे दे!!

रोज वही कोशिश खुश रहने की,
माँ होती तो मुस्कुरा लेता!!

देर रात हो जाती है घर पहुंचते-पहुंचते
माँ होती तो वक़्त से घर लौट जाता!!

सुना है कई दिनों से वो भी नहीं मुस्कुराई,
ये मजबूरियां न होती तो घर चला जाता!!

बहुत दूर निकल आया हूँ घर से अपने,
जो तेरे सपनों की परवाह न होती,

— तो बस चला आता!!

अंकिता जैन, अशोकनगर
ankita_jain20002000@yahoo.com

मेरे सुपौत्र विशेष पाटनी (CBX 8047) के द्वारा आपकी सुन्दर पत्रिका Chirping Sparrow आती है। मैं अत्यन्त रुचि से पढ़ता हूँ। पिछले अंक में प्रश्नोत्तर के माध्यम से दही के बारे में बताया गया। शाकाहारियों के लिए दही एक अतिमहत्तवपूर्ण खाद्य पदार्थ है। दही की न्यूट्रीशनल वेल्यु दूध से भी अधिक है।

– डॉ. मन्मथ पाटनी, इन्दौर

चिरपिंग स्पेरो जैसे ही मेरे घर पर दस्तक देती है, मेरे घर के सदस्यों में सबसे पहले पढ़ने की होड़ सी लग जाती है। मैं भी कोशिश में होती हूँ कि मुझे ही सबसे पहले चिरपिंग स्पेरो पढ़ने मिले। पर ये मेरी आदत में है कि मेरा एक बार में चिरपिंग स्पेरो पढ़के मन नहीं भरता तो सबके पढ़ने के बाद इसे मैं अपनी पढ़ने वाली टेबल पर ही रख लेती हूँ और पढ़ते-पढ़ते जब थोड़ा बहुत बोर हुई तो चिरपिंग स्पेरो को दोबारा पढ़ना शुरू कर देती हूँ। इसके एक या दो लेख पढ़ते ही मन तरोताजा हो जाता है और दोबारा एक नयापन लिए अपनी पढ़ाई को शुरू कर देती हूँ और ये एक दम सच है कि यह मेरी पसंदीदा पत्रिका है। मैत्री समूह से गुजारिश है कि इस समाचार पत्र को नियमित रखें।

– सोनिका जैन, कर्रापुर

"चिरपिंग स्पेरो" मैत्री समूह द्वारा प्रकाशित एक अत्यंत ही उपयोगी पत्रिका है। श्री द्वारका प्रसाद जी माहेश्वरी की प्रथम पृष्ठ पर कविता, संदेशप्रद कहानी, चित्रों का संयोजन, प्रकृति एवं जनजीवन के लिए प्रभावित करती इसमें समाहित जानकारी, पाठकों के पत्र आदि प्रेरणादायी हैं। मेरे विचारों में यदि महान व्यक्तियों के प्रेरणात्मक संस्मरण पत्रिका में छापे जाएं एवं सम्पादकीय आलेख को अलग रूप देकर छोटे-छोटे सादे वाक्य प्रत्येक पृष्ठ पर छपे हों तो पत्रिका का महत्त्व अधिक बढ़ जाता है।

– पदमचंद जैन, जयपुर

साल ने ठुकराई पीपल की सलाह

भोर का समय था, जंगल में उस दिन बारिश हो रही थी। सारे वृक्ष एक दूसरे से बातचीत में मशगूल थे। बरगद ने अपनी विशाल शाखाएं हिलाते हुए दूसरे वृक्षों से कहा, 'जानवर हमारी छाया में आकार आराम करते हैं, लेकिन अपने पीछे भारी गंदगी छोड़ जाते हैं, बदबू से बुरा हाल हो जाता है।' साल के वृक्ष ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई, 'हम चुप रहते हैं, इसलिए कोई हमारी तरफ ध्यान नहीं देता, अब हमें जानवरों को भगाना ही पड़ेगा।' पीपल का पेड़ वहां सबसे बुजुर्ग था। उसने कहा, 'नहीं ऐसा करना ठीक नहीं होगा। जानवर हमारे लिए परेशानी का कारण हैं, इससे इनकार नहीं, लेकिन वे हमारे काम भी आते हैं। हम सब एक दूसरे पर निर्भर हैं। वृक्ष, जानवर, इंसान सब। इसलिए हमें जानवरों को भगाने का निर्णय नहीं लेना चाहिए।' इस पर साल वृक्ष ने क्रोध में कहा, 'मैं किसी की नहीं सुनूंगा अब से मैं किसी जानवर को यहां नहीं आने दूंगा।' अगले दिन उसने ऐसा ही किया जब एक तेंदुआ उसकी छाया में सुस्ताने आया तो साल ने अपनी टहनियों को जोर-जोर से हिलाना शुरू कर दिया, डर के मारे तेंदुआ वहां से भाग खड़ा हुआ। कुछ दिन के बाद जानवरों का वहां आना कम हो गया, वे जंगल से दूसरी जगह चले गए। कुछ हफ्तों बाद एक दिन दो लकड़हारे आए और साल के नीचे बैठ गए। साल ने पूछा, 'ये इंसान यहां क्यों आए हैं?' पीपल ने जवाब दिया, 'पहले ये यहां नही आते थे, क्योंकि इन्हें डर था कि यहाँ जंगली जानवरों का बसेरा है, लेकिन जब से बाघ-तेंदुओं ने आना बंद किया है, इनकी हिम्मत बढ़ गई है।' बस फिर क्या था।, देखते ही देखते लकड़हारों ने कुल्हाड़ी निकाली और पहला वार साल के वृक्ष पर ही किया।

हर किसी को एक दूसरे की जरूरत होती है। अपने आसपास मौजूद हरेक चीज से आपसी तालमेल और सामंजस्य ही सुखी जीवन की कुंजी है। थोड़ी बहुत परेशानी के चलते किसी से संबंध खत्म नहीं करना चाहिए।

BOOK-POST

Year - 8, Issue - III, April - June 2011

Chirping Sparrow

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

From
MAITREE SAMOOH
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com,
samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com
http://maitreesamooh.blogspot.com
Mob.: 94254-24984

To, ______________________

____

____